ISSN: 2582-6557 RNI -MP/BIL/2020/78687

JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY
NATIONAL PEER- REFEREED,REVIEW JOURNAL, INDEXING &IMPACT FACTOR-5.2

CONTANTS

S.NO	PAPER TITAL	AUTHOR NAME	P.NO
01	Impact Of Urbanization On The Diversity Of Jaipur City Birds	Prerna Sharma Prof.P.P.Bakre	1-8
02	छत्तीसगढ़ में मानव विकास सूचकांक में प्रति व्यक्ति आय उच्चवचन की स्थिति	डॉ रश्मि पाण्डेय	9-15
03	राजनीति और आतंकवाद: जम्मू कश्मीर के सदंर्भ में एक विशेष अध्ययन	डॉ सुरेश मेहरा	16-24
04	वर्तमान दौर में बाल अपराधों की उभरती प्रवृत्तियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ उमा बहुगुणा	25-30
05	भारत में प्रमुख राजनीतिक दल एवं उनके कार्य-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक समीक्षात्मक अध्ययन	सीताराम सैनी	31-42
06	How Computer Labs Of Educational Institutes Are Effective For Students?	Vishal Bharvesh	43-51
07	A study on the impact of work life balance on job satisfaction of ib board school teachers	Priyanka verma Vikas kumar khare	52-67
08	गुरूग्राम की अधिवास प्रणाली, भौतिक संसाधन और पर्यटन की संभावनाओं का भौगौलिक अध्ययन	डॉ इंदु	68-76
09	'जूठन' आत्मकथा में पात्रों द्वारा किए गया संघर्ष'	सीताराम सिमोलिया डॉ कमलेश सिंह नेगी	77-82
10	ग्रामीण विकास में वैज्ञानिक कृषि का योगदान (दमोह जिले के विशेष सन्दर्भ में)	डॉ. विजय कुमार साहू मो. आशिक अली	83-91

ISSN: 2582-6557 RNI -MP/BIL/2020/78687

JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY
NATIONAL PEER- REFEREED,REVIEW JOURNAL, INDEXING &IMPACT FACTOR-5.2

छत्तीसगढ़ में मानव विकास सूचकांक में प्रति व्यक्ति आय उच्चवचन की स्थिति

डॉ. रश्मि पाण्डेय*

"आर्थिक संवृद्धि से गरीबी तभी घटती है, जब वह गरीब लोगों के रोजगार, उत्पादकता और मजदूरी में वृद्धि करती हैं और जब सार्वजनिक संसाधन मानव विकास में सुधार के लिए लगते है.....वास्तव में आर्थिक संवृद्धि और मानव विकास तभी साथ साथ चल सकतें हैं। जब आर्थिक संवृद्धि में श्रम का अधिक इस्तेमाल होता है और रोजगार का सृजन होता है और जब मानवीय कुषलता और स्वस्थ्य का तेजी से सुधार होता है।"

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम

मानव विकास रिपार्ट(1997)

मानव विकास सूचकांक के माप में प्रति व्यक्ति आय एक महत्वपूर्ण घटक हैं। अतः प्रति व्यक्ति आय सकल राष्ट्रीय आय, सकल घरेलू आय, आदि में परिवर्तन मानव विकास सूचकांक पर प्रभाव पडता है। होने सें भी मानव विकास सूचकांक में प्रति व्यक्ति आय उच्चावचन की स्थिति का अध्ययन के लिए आवश्यक है कि राष्ट्रीय आय के विभिन्न अवधारणा के आधार पर पृथक-पृथक रूप से अध्ययन किया जाये।

राष्ट्रीय आय की अवधारणा

राज्य के सकल घरेलु उत्पाद के अनुमान

राज्य के सकल घरेलु उत्पाद के अनुमान निश्चित अवधि में आर्थिक विकास के स्तर में आने वाले परिवर्तन को प्रदर्शित करता है। साथ ही यह भी प्रदर्शित करता है कि प्रत्येक क्षेत्र में वृद्धि और कमी के कारण क्या हैं। चालू वर्ष के उत्पादन को चालू वर्ष की कीमतों पर गुणा करके चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय निकाली जाती है। दूसरी ओर चालू वर्ष के उत्पादन को आधार वर्ष की कीमतों से गुणा करके स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय निकाली जाती है।

छत्तीसगढ़ के सकल राज्य घरेलु उत्पाद (प्रचलित भावों पर) में निरंतर वृद्धि हो रही है। प्रचलित कीमतों पर निकाली गई सकल घरेलु उत्पाद 2004-2005 में जहाँ 4786229 लाख

* **सहायक प्राध्यापक, शासकीय रेवती रमन मिश्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय सूरजपुर (छ.ग.)**

रूपये थी वहीं 2013-14 में यह लगभग 3.9 गुना बढकर 18506017 लाख रूपये हो गई।

यदि इन दस वर्षो में वृद्धि दर देखें तो सबसे अधिक वृद्धि दर वर्ष 2006-07 में 25.38 प्रतिशत तथा सबसे कम वर्ष 2009-10 में 2.47 है। जो छत्तीसगढ़ राज्य अर्थव्यवस्था के विकास कर चुका है एवं इन दस वर्षो में छत्तीसगढ़ के सकल राज्य घरेलु उत्पाद (प्रचलित भावों पर) की संयुक्त वृद्धि दर 16.41 प्रतिशत है जबकि विचरण गुणांक 44.23 प्रतिशत है।

छत्तीसगढ़ का सकल राज्य घरेलु उत्पाद स्थिर (2004.05) भावों पर

छ.ग. की वर्ष 2004.2005 से लेकर 2013 . 2014 तक राज्य तक घरेलु उत्पाद को स्थिर कीमतों पर अध्ययन किया गया एवं पाया गया है कि छत्तीसगढ़ के सकल राज्य घरेलु उत्पाद (स्थिर भावों पर) में निरंतर वृद्धि हो रही है। स्थिर कीमतों पर निकाली गई सकल राज्य घरेलु उत्पाद 2004-05 में 4786229 लाख रूपय थी वो 2013-14 में बढकर लगभग दुगना होकर 9456000 लाख रूपय हो गयी है।

यदि प्रतिशत रूप में देखें तो सकल राज्य घरेलू उत्पाद में सर्वाधिक वृद्धि दर वर्ष 2006-07 में 18.6 प्रतिशत तथा सबसे कम वर्ष 2005-06 में 3.23 प्रतिशत है। 2009-10 में स्थिर एवं प्रचलित दोंनों ही भावो पर सकल राज्य उत्पाद में कमी का प्रमुख कारण वर्ष 2008 की वैश्विक मंदी थी, जिसका प्रभाव न केवल अमेरिका बल्कि भारत के सभी राज्यों पर पडा एवं इन दस वर्षो में छत्तीसगढ़ के सकल राज्य घरेलु उत्पाद (स्थिर भावों पर) की संयुक्त वृद्धि दर 8.03 प्रतिशत है जबकि विचरण गुणांक 22.78 प्रतिशत है।

निवल राज्य घरेलु उत्पाद

एक राज्य में एक वर्ष की अवधि में राज्य के अपने ही साधनों द्वारा उत्पादित की गई वस्तुओं एवं सेवाओ के कुल मौद्रिक मूल्य में से यदि घिसावट व्यय अथवा प्रतिस्थापन व्यय घटा दिया जाय तो जो षेश बचता है। उसे निबल राज्य घरेलु उत्पाद कहा जाता है।

छत्तीसगढ़ के निवल राज्य घरेलु उत्पाद (प्रचलित भावों में) निरंतर वृद्धि हो रही है। 2006-07 में छत्तीसगढ़ की निवल राज्य घरेलु उत्पाद 4138676 लाख रूपय थी जो वर्ष 2013-14 में बढकर 15448757 लाख रूपये हो गई है।

यदि प्रतिशत रूप में देखे तो निवल राज्य घरेलु उत्पाद (प्रचलित भावों में) सर्वाधिक वृद्धि वर्ष 2005-06 में 26 प्रतिशत है, जबकि सबसे कम वर्ष 2005-06 में 1.68 प्रतिशत है एवं इन दस वर्षो में छत्तीसगढ़ के निवल राज्य घरेलु उत्पाद(प्रचलित भावों पर) की संयुक्त वृद्धि दर16.08 प्रतिशत है जबकि विचरण गुणांक 43.24 प्रतिशत है।

छत्तीसगढ़ का निवल राज्य घरेलु उत्पाद स्थिर (2004-05) भावों पर

छ.ग. का वर्ष 2004.05 तक निवल राज्य घरेलु उत्पाद स्थिर भावों पर छत्तीसगढ़ के निवल राज्य घरेलु उत्पाद (स्थिर भावों में) निरंतर वृद्धि हो रही है वर्ष 2004-05 में छत्तीगढ की निवल राज्य घरेलु उत्पाद 4138676 लाख रूपय थी जो वर्ष 2013-14 में लगभग 1.8 गुना बढकर 745002 लाख रूपय हो गया है।

यदि प्रतिशत रूप में वृद्धि दर देखें तो छत्तीसगढ़ के निवल राज्य घरेलु उत्पाद (2004-05 स्थिर भावों पर) में सर्वाधिक वृद्धि दर वर्ष 2006-07 19.02 प्रतिशत है। जबकि सबसे कम वर्ष 2005-06 में 1.63 प्रतिशत है एवं इन दस वर्षो में छत्तीसगढ़ के निवल राज्य घरेलु उत्पाद(स्थिर भावों पर) की संयुक्त वृद्धि दर 7.01 प्रतिशत है जबकि विचरण गुणांक 20.02 प्रतिशत है।

प्रचलित भावों पर छत्तीसगढ़ की प्रति व्यक्ति आय

निवल राज्य घरेलू उत्पाद (प्रचलित भाव) को इस वर्ष की मध्य वार्षिक प्रक्षेपित जनसंख्या से भाग देकर प्रति व्यक्ति आय की गणना की गई है। छत्तीसगढ़ की प्रतिव्यक्ति आय (प्रचलित भाव पर) में निरंतर वृद्धि हो रही है। वर्ष 2004-05 में छत्तीसगढ़ की प्रति व्यति आय (प्रचलित भाव पर) 18559 रूपये थी जो वर्ष 2013-14 में लगभग 3 गुना 58297 रूपये हो गई है ।

यदि प्रतिशत रूप में वृद्धि दर को देखें तो छत्तीसगढ़ की प्रतिव्यक्ति आय (प्रचलित भाव पर) सबसे अधिक वर्ष 2006-07 में 23.28 प्रतिशत तथा सबसे कम वर्ष 2009-10 में मात्रा 0.02 प्रतिशत है। इन दस वर्षो में छत्तीसगढ़ के प्रति व्यक्ति आय (प्रचलित भावों पर) की संयुक्त वृद्धि दर 13.87 प्रतिशत है। जबकि विचरण गुणांक 37.88 प्रतिशत है।

स्थिर (2004-2005) भावों पर छत्तीसगढ़ की प्रति व्यक्ति आय

छ.ग. के प्रति व्यक्ति आय में वर्ष 2004.05 से लेकर 2013.14 तक स्थिर कीमतों पर निकाली गई राज्य प्रति व्यक्ति आय 2004.05 में 18859 रू. थी जो वर्ष 2013.14 में लगभग डेढ़ गुना बढ़कर 28113 रूपये हो गई है। यह जो छत्तीसगढ़ राज्य अर्थव्यवथा कें आिर्थक विकास का संकेतक है।

यदि प्रतिशत रूप में देखे तो राज्य प्रति व्यक्ति आय में सार्वाधिक वृद्धि 2006.07 में 16.46 प्रतिशत हैं और सबसे कम वर्ष 2012.13 में मात्र 0.95 प्रतिशत है। लेकिन वर्ष 2005.06 में प्रति व्यक्ति आय वृद्धि दर स्थिर कीमतो पर ऋणात्मक हो गई है। जिसका प्रमुख कारण वर्ष 2008 की वैष्विक मंदी थी, जिसका प्रभाव न केवल अमेरिका बल्कि भारत के सभी राज्यों पर पड़ा। इन दस वर्षो में छत्तीसगढ़ के प्रति व्यक्ति आय (स्थिर भावों पर) की संयुक्त वृद्धि दर 4.99 प्रतिशत है जबकि विचरण गुणांक 14.61 प्रतिशत है।

सकल राज्य घरेलू उत्पाद में क्षेत्रवार प्रतिशत योगदान प्रचलित भावों पर

छत्तीसगढ़ राज्य के वर्ष 2004.05 से 2013.14 तक के सकल राज्य घरेलू उत्पाद में प्रचलित भावों पर क्षेत्रवार प्रतिशत योगदान को बनाया गया। हम यह जानते है सकल राज्य घरेलू उत्पाद की गणना की सुविधा के लिए उन्हें तीन भागों में बाँटा जाता है, प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र और तृतीयक क्षेत्र।

प्राथमिक क्षेत्र - इसमें कृषि, वानिकी, मत्स्य शामिल किए जाते है-

द्वितीयक क्षेत्र -इसमें खनन एवं खदान, विनिर्माण बिजली, गैस और पानी

तृतीयक क्षेत्र - इसमें थोक एवं खुदरा व्यापार, रेस्तरां और होटल, परिवहन, भण्डार एवं संचार तथा अन्य वैयक्तिक एवं सामाजिक सेवाएँ शामिल की जाती है।

तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है, कि सकल राज्य घरेलू उत्पाद में वर्ष 2004-05 में तृतीयक क्षेत्र का योगदान प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्र की तुलना में अधिक है। वर्ष 2005-06 में प्राथमिक क्षेत्र का योगदान अन्य क्षेत्रो की तुलना में अधिक है वर्ष 2006-07 से 2008-09 तक द्वितीयक क्षेत्र का योगदान दोनों क्षेत्रो से अधिक है। परंतु इसमें कुछ परिवर्तन के साथ

वर्ष 2009-10 से 2013-14 में तृतीयक क्षेत्र का योगदान प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्र की तुलना में अधिक हो गया है। अतः तालिका से स्पष्ट है कि आय का वितरण धीरे-धीरे प्राथमिक क्षेत्र से तृतीयक क्षेत्र की ओर हो रहा है।

सकल राज्य घरेलू उत्पाद में क्षेत्रवार प्रतिशत योगदान स्थिर भावों पर

सकल राज्य घरेलू उत्पाद में वर्ष 2004-05 एवं 2005-06 में तृतीयक क्षेत्र का योगदान प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्र की तुलना में अधिक है। वर्ष 2006-07 से 2008-09 तक द्वितीयक क्षेत्र का योगदान शेष दोनों क्षेत्रो से अधिक हो गया हैं। परंतु इसमें कुछ परिवर्तन के साथ वर्ष 2009-10 से 2013-14 में तृतीयक क्षेत्र का योगदान प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्र की तुलना में अधिक हो गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1-Eleventh five year plan (2007-2012), Government of Chhattisgarh, St ate Planing Board.

2-Annual plan, 2001, 2010 Chhattisgarh Government of Chhattisgarh, Finance and Planing Department.

3-Report of the 2nd common review Mission, Chhattisgarh 16th Decemeber to 22nd December.

4-Report of 1st common Review Mission's visit to State Chhattisgarh State Report. (Period of visit w.e.f. 15.11.2007 to 20.11.2007)

5-District level household and facility survey : Fact sheet Chhattisgarh, international in stitute for population sciences (Deemed) University, Mumbai.

6-2005-06, National Family Health Survey (NFHS-3) Fact Sheet Chhattisgarh (Provisional Data), Ministry of Health and Family Werlfare Govergment of India.

7-1998-99 NFHS-2, fact sheet Chhattisgarh, Ministry of Health and Family Welfare Government of India.

8-1992-93 National Family Health Survey (NFHS-1), Fact sheet Chhattisgarh, Ministry of Health and Family Welfare Government of India.

9-School Education in Chhattisgarh, Report on. Medium Term Expenditure Framework, January-2011 Raipur, Europen Union, State Paternership Programme Chhattisgarh.

10-Suryanarayan, M.H., Agrawal Anskush and Prabhu Seeta, in equality adjusted human development index for india's state, 2011.

11-Human development Report -2007-08

12-RBI, Handbook of statistics an Indian Economy 2008-09.

13-छत्तीसगढ़ सांख्यिकीय संक्षेप, 2005-06 से 2013-14, आर्थिक एवं सांख्यिकीय संचालनालय छत्तीसगढ़ शासन

14-छत्तीसगढ़ एक दृश्टि में, 2001-2015 तक आर्थिक एवं सांख्यिकीय संचालनालय, छत्तीसगढ़ शासन

15-छत्तीसगढ़ आर्थिक सर्वेक्षण वर्ष 2005-06 से 2014-15 तक आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय छत्तीसगढ़ इन्द्रावती भवन नया रायपुर

16-छत्तीसगढ़ राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण

17-छत्तीसगढ़ वार्षिक जीवनांक सांख्यिकीय 2000-01 से 2014-15, आर्थिक एवं सांख्यिकीय संचलानालय छत्तीसगढ़

18-छत्तीसगढ़ की अनुमानित राज्य घरेलु उत्पाद 2004-05 से 2014-15, आर्थिक एवं सांख्यिकीय संचनालय, छत्तीसगढ़

19-छत्तीसगढ़ के सांख्यिकीय पॉकेट बुक- 2004-15, आर्थिक एवं सांख्यिकीय संचालनालय, छत्तीसगढ़

20-12 वीं पंचवर्षीय योजना का दृष्टिकोण 2012.17, मानव विकास के द्वारा समावेशीकरण, राज्य योजना आयोग, छत्तीसगढ़ शासन

21.छत्तीसगढ़ मानव विकास प्रतिवेदन - 2007

22.भारत की जनगणना -2001.2011

JPMRJ
JANMAT POWER
MONTHLY RESEARCH JOURNAL